

अथ साँझीके पद लिख्यते॥रागगौरी॥ श्रीवृषभान लड़ैती गाइयें
कीरतिकुल मंडनबाल हो॥सोनेकीसी बेलि हो प्यारी चंपेकीसी माल हो
॥१॥ हंसगमनी मृगलोचनी शोभित सहज सिंगार ॥ चमकत चंचल
चीकने सिर सटकारे बार ॥ २ ॥ घूँघरवारे बारन ऊपर शोभित सुंदर
साल ॥ चंदके फंद परे अहिनंदन उरभे कंचन जाल ॥ ३ ॥ अतल-
सकौ लहेंगा कटि गाढ़ी दरियाई की अँगिया पीत ॥ उरज सुभट
कंचनकवच सजि आये रति रणजीत ॥ ४ ॥ कृशकटि केहरि देखि-
दुरै हरि जेहर तेहर पाय ॥ गजगमनी कमनी अवनी रवनी रति
लेत बलाय ॥ ५ ॥ कर चूरी ललकै भलकै पलकै नलगै छबि देख ॥
अँगुरिन मुँदरी पोंहौँची गजरा बाजूबंद विशेष ॥ ६ ॥ चंपकली चौकी
चमकै दमकै दुलरी पिय पोति ॥ चितकौँ लेत चुराय चाहिकै बदन चंदकी
जोति ॥ ७ ॥ अरुण अधर दमकत दशनावलि श्याम चपलता सार ॥
कमलकोशमें बैठी पंगति मानो भृंगकुमार ॥ ८ ॥ बेसर को मोती लटकै
मटके खटके प्रिय प्रान ॥ श्रवन बनी रुचिमनी कनककी तनक तरकुली
कान ॥ ९ ॥ पियतृखमोचन रतिरस रोचन चंचललोचन नार ॥ कुँवर किशोर
चकोर चैंहैं टुबा पढ़त चंद चटसार ॥ १० ॥ अलिकुलगंजन रतिरसरंजन
नयनन अंजन दीन ॥ क्रीड़त सुधा सरोवर महियाँ मानो मनसिजके मीन
॥ ११ ॥ समरसहायक नवरसनायक सायक घायक नयन ॥ कुँवर कुरंग
सुरंग कमलकाननसौँ ठानत ठैन ॥ १२ ॥ कारी अपकारी भारी बरुनी
बरनै कवि कौन ॥ भौँहैं सुठि सोहैं मोहैं मानो हावभावके भौन ॥ १३ ॥
शुभ बिरियाँ दुपेहेरियाके फूलनकी बेंदी दीनी भाला ॥ इंदुबधूभानों नवल-
चंदकौँ आय मिली ततकाल ॥ १४ ॥ शीश फूल सोहैं मोहैं बनी तनक कन-
ककी आड़ ॥ चिबुक चारु मुसिकाय हैं सत जब परत कपोलन गाड़ ॥ १५ ॥
यह विधि छबि अगाधा साधा राधाजू सखियन माँझ ॥ बिटियाँ बहुत जो
गोपनकी संग खेलत साँझी साँझ ॥ १६ ॥ गोधूलकी बिरियाँ डलियाँ फूल-

नकी लै चलीं हाथ॥बीनत फूलन यमुना कूलन श्यामाजूके साथ॥१७॥
 एक लिये ओली चोली पर चाँपचिबुकतर चीर॥फूलन तोरततनहिं
 मरोरत जहाँ भ्रमरनकी भीर ॥१८॥ एकन लै लावन्य ललित पटकी
 अटकी कटि छीन॥रमक भ्रमक पल्लव नवाय चढ़ बीनत फूल प्रवीन
 ॥१९॥ कुंदी कुंद करन कोमल निरवारत बाला बेलि ॥ ललितलवंग
 लता बनिता पर रहे झूमका भेलि ॥२०॥ जाई जुही केतकी निवारी
 चमेली रायबेल ॥ फूलन की कर गेंदुक बाला बनमें खेलत खेल ॥२१॥
 बौरसरीके फूलनकी नकफुली बनावत एका॥श्यामा अभिरामा सुख
 धामा खेलत खेल अनेक ॥२२॥ तिहिं छिन कुंजबिहारीजूदुरिदेखत
 कुंजन ओट ॥ रहे हैं चित्र कैसैजु चितरे लगी दृगन की चोट ॥२३॥ कियो
 सखीको रूप लालने भर गुलाबदल गोद ॥ त्रियारूप धर दरशन दीनों
 मनमें मानत मोद ॥२४॥ निरखि निरखि वृषभाननंदिनी बौली बचन-
 रसाल ॥ सबसिंगारसोहै मोहै तूको हैरी नवबाल ॥२५॥ तूक्यों फिरत
 अकेली हेली यह बन यमुना कूल ॥ नंदगाम घर साँझी कौ हम
 बीनन आई फूल ॥ २६ ॥ उत्कंठित वृषभाननंदिनी कंठ भुजा उर-
 मेल ॥ आज अबार भई साँझीकों तू संग हमारेखेल ॥२७॥ सखी लई
 सब बोल बोल गौरंभन धुनि सुनि कान ॥ बड़ी बार घर जैहैं तो खीजें बाबा
 वृषभान ॥ २८ ॥ चंदा चंद्रभगा चंद्रावलि चंचलनयनी चली धाम ॥
 बहुत फूल बीनै हैं भटूरी पूजै मनके काम ॥२९॥ कमल फिरावत
 गीतजो गावत आवत घर ब्रजबाल ॥ फूलनकी कर गेंद लकुटिया फूल-
 नकी उरमाल ॥ ३० ॥ माय धाय उर लाय लई कीरतिजू परम-
 प्रवीन ॥ अरग बढ़ाय लई घर भीतर आप आरती कौन ॥३१॥ मृगमद
 चंदन केसरसों श्यामाजू लीपी भीत ॥ कामधेनु के गोबरसों रचि
 साँझी फूलन चीति ॥३२॥ धूप दीप धरि भोग अमृतसर आप आरतौ
 उतारि ॥ गावत गीत पुनीत किशोरी श्रीवृषभानकुमारि ॥३३॥ कर-
 व्याहू सब संग खेलि चली अपने अपने धाम ॥ श्यामाजू और नवल
 सखी सुख लूट्यौ चार्यों जाम ॥३४॥ त्रिय बागौ ललिताहिंदीयौ
 श्यामापति सुघर सुजान ॥ रसिकरूप धर केलि करी सुख-
 सागर प्रानन-प्रान ॥३५॥ शरदनिशा सुख यह विधि राजा माधौजू-
 नित्यबिहारा॥शोभापरबल जाय श्यामधन अवलोकत सुखसार ॥३६॥

(२)

(७)

॥१॥ सब मिल आई लाड़िली वृषभान नृपति के द्वार हो ॥ धृ० ॥
 सब मिल आय कछौ कीरतिसौं देहु लड़ैती संग ॥ बनमें फूल बिराज
 रहे हैं खेलन साँझी रंग ॥ १ ॥ यह सुन कीरति बोल कुँवरिकों उबटि-
 न्हवाई प्रीति ॥ अंग अँगोछ फुलेल केश बिच पाटी पारी चीति ॥ २ ॥
 बेनी सुरंग गूथि माँगमें सेंदुर भरी बनाय ॥ बाँयें सीसफूल इत चंदा
 बिच लटकन लटकाय ॥ ३ ॥ टीकी कमलपत्र काजर दै बेसर चिबुक
 बिराज ॥ खुटिला खुभी और टेढ़ी बेंदी भूमक साज ॥ ४ ॥ कंठ-
 सरी तिमनी दुलरी चंपकली हार हमेल ॥ मुलकट अँगिया बाँह
 बिजौंटे बाजूबंदन पेल ॥ ५ ॥ चूरी गजरा कंकन पोंहोंची हाथ
 साँकरा मुँदरी ॥ कटि लहेंगा सारी फुफुंदी बाजत किकिणी सगरी
 ॥ ६ ॥ पग नूपुर पायल जेहर अनबट बिछिया पगपान ॥ यह
 सिंगार कर चली लड़ैती सब मिलि गावत गान ॥ ७ ॥ बननें बीनत फूल
 हरखसौं डलियाँ सोहे हाथ ॥ फूलगेंदकों आये लालन सखान कोऊ
 साथ ॥ ८ ॥ खेलत गेंद परी इन बीचन प्यारी लई उठाय ॥ लालन
 आय गेंद माँगत हैं ललिता कछौ समुझाय ॥ ९ ॥ अब तो गेंद न पैहौ
 लालन चतुराईके मूल ॥ पूछत लाल सबै क्यों आई बनमें बीनन फूल
 ॥ १० ॥ कछौ लड़ैती साँझी धरिहैं फूल सबै लै चीति ॥ लाल कछौ मोहि
 आछी आवै देखौ मेरी रीति ॥ ११ ॥ सबन कछौ कैसें लै चलियें एकन
 कछौ उपाय ॥ पेहेरावौ आभूषन सारी करीयें सखी सजाय ॥ १२ ॥ सबै
 हरख सिंगार किये मिल चलीं आपने गेह ॥ नाम धर्यौ श्यामाजू इनको
 तब बाँह परस्पर देह ॥ १३ ॥ ललिता चंद्रभागा ब्रजमंगल मैना नयना
 रूपा ॥ करुणा मोहा कुमुदा रत्ना लोभा ललना अनूपा ॥ १४ ॥ रंभा कृष्णा
 दुर्गा ध्याना रूपा हरखा नाम ॥ रंगा हंसा दामा प्रेमा ज्ञाना जुहिला
 भाम ॥ १५ ॥ चंपा बहोला सुमना नीला हीरा मुक्ता प्यारी ॥ कुंजा
 अमला समला विमला चंद्रावली सुकुमारी ॥ १६ ॥ तारा कमला
 अमला यमुना वृंदानंदा नारी ॥ अबला शीला सुखिया प्रमुदा नवला
 सुमति बिहारी ॥ १७ ॥ चतुरा कामा रसिका श्यामा राधा लै घर आई ॥

एक वेश एक रूप सबनकोँ देखत रही लुभाई ॥१८॥ गावत आवत
 सब मन भावत आरती कीरति साज ॥ पूछत कह्यो लड़ैती यह को जोरी
 भली विराज ॥१९॥ बीनत फूल यह मैं देखी पूछी इनकी बात ॥ नंद-
 गाममें बास बसत है श्यामा नाम कहात ॥२०॥ इनमें एक बड़ो गुण
 मैया जानत साँझी चीति ॥ मन हरखित कीरति तब बोली खेलो सब
 मिलि प्रीति ॥ २१ ॥ मुठिया वार आरती बारी भीतर गई लिवाय ॥
 भीति लीप चंदनसों छिरकी साँझी धरत बनाय ॥२२॥ धूपदीपनैवेद्य
 धर्यो पुनि आरती करत सँवारि ॥ कीरति कह्यो बियारू कीजै भूखी हो
 सुकुमारि ॥२३॥ भोजनकर सब हाथ पखारे बीरारत्ना देत ॥ बीरालै
 कह्यो हम घर जैहँ कीरति कह्यो सुहेता ॥२४॥ श्यामा तुम जिन जाहु दूर घर
 यहाँई सोवो रात ॥ औरनसों यों कह्यो बेगिही आवोगी उठ प्रात ॥२५॥
 वे तब गई रही है श्यामा खेलत चोपरंग ॥ जीत परस्पर होत दुहुनकी
 राधा श्यामा संग ॥२६॥ एक सेज पौढ़े तब दोऊ उठे प्रात अरसाय ॥
 बेऊ सब आई तिहि अवसर निरख सबै मुसिकाय ॥ २७ ॥ साँझी
 डलिया में धरलीनी गावत चली सुभाय ॥ डलिया यमुनाजल पधराई
 सबै न्हात सुख पाय ॥२८॥ लाल कह्यो अब हम घर जैहँ मैया जानत-
 नाय ॥ यों कहि आवत जसुमति देखी रूखे भये लजाय ॥२९॥ जसु-
 मति पूछत रात कहाँ रहे लालन कही बनाय ॥ दौरी गाय गयौ
 ता पाछे गोवर्द्धन लियो बुलाय ॥३०॥ आछे फल लै मोहि खवाये सोय
 रह्यो तापासा ॥ द्वारकेश प्रभुकी बतियाँ सुन जसुमति आयौ हासा ॥३१॥

③

॥३२॥ कीरति कुल मंडन गाईयें वृषभान नृपतिकी बाल हो ॥
 कंचन तन सोहै मोहै उरपहेरें मुक्तामाल हो ॥१॥ सखीबुंद सब आय
 जुरीं वृषभान नृपति के द्वार ॥ बीनन फूल चलौ बन राधे नवसत
 साजसिंगार ॥२॥ यह सुन कीरतिजू हँसिकें प्यारीको कियौ है सिंगार ॥
 कबरी कुसुम गुही है मानौ उडुगणकी अनुहार ॥३॥ शीशफूल जिम
 चंद विराजत शोभा कही न जाय ॥ कोटि चंद वारों मुसिकन पर काम
 रह्यो मुरझाय ॥ ४ ॥ बंक बिराज रहे भृकुटी तट खुटिला श्रवनन

पास ॥ यौ लपटाय रहे दोऊ जनु नयन दरशकी आस ॥५॥ करनफूल
झूमक अरु बंदी लटकन बैदि लिलारा ॥ नकबेसर मोती अति सोहै लट-
कन परम सुठार ॥६॥ मुखही तमोल अधर अरुनाई दशन लसन अति
सारा ॥ चिबुक बिंदु मधुकर सुत मानौ बैठ्यौ आसन मारा ॥७॥ अंजन ऊपर
खजन वारौ नयन चपलता मीना ॥ कीरतिजू छबि निरखि निरखि कै दीठ-
दिठौना दीना ॥८॥ चौकी चमक तिमनियाँ दुलरी चंपकली उपहार ।
बाजूबंद पछेली चूरी कंकन गजरा चार ॥ पौहोंची रत्न चौक औ
मुँदरी नखभूषण छबि देता ॥ श्रीकर कमल बिराजत मानो उडुगण चंद

समेत ॥ १० ॥ क्षुद्रघंटिका कटि तट राजत जेहरि नूपुर पाय ॥ अंगुरि न
बिछिया अनवट सोहै शोभा कही न जाय ॥११॥ हरे कसबकौ लेहेंगा
सोहै कंचुकी केसरि अंग ॥ सारी सुही रंगी है मानों गुलाबों सके रंग ॥१२॥
कर सिंगार कह्यौ कीरतजू जाउल डैती साथ ॥ अली यूथमें चली परस्पर
फूलन डलिया हाथ ॥१३॥ चलत चाल मराल बाल श्रीराधाजू सखि-
यन माँझ ॥ बीनत फूलन यमुना कूलन खेलत साँझी साँझ ॥१४॥ जाल-
रंध देखत है मोहन दृष्टिपरी ब्रजबाल ॥ त्रियारूप कियौ है तबही आय
मिले ततकाल ॥१५॥ छबि निरखत वृषभान दुलारी बहुत करी मनु-
हारि ॥ बीनत फूल अकेली हेली तू को है सुकुमारि ॥१६॥ कौन गाम
बसति हौ सुंदरि कहा तिहारौ नाम ॥ आज अबार भई है प्यारी चलौ
हमारे धाम ॥१७॥ नंदगाममें बास बसति हूँ साँवरी मेरौ नाम ॥
साँझी मिस आई हौ या बन पूजे मनके काम ॥१८॥ सौन जुही चमेली
चंपारायबेलि अरुबेलि ॥ गुलाबोंसकी गेंद लिये कर करत परस्पर केलि ॥
॥१९॥ कमल कनेर केतकी निवारौ सेवती सदा गुलाब ॥ गुलतुरा सदा
सुहागिन फूलनकी भरि छावा ॥२०॥ ललिता चंपकलता विशाखा स्यामा
भामा जेह ॥ चंद्रभगा तुंगा चंद्रावलि राधा माधव नेह ॥२१॥ ठौर
ठौर सब कहत सखिनसौं चलौ भटू घर जाँह ॥ स्यामाजू अरु नवल
सखी दोऊ गेह परस्पर बाँह ॥२२॥ सौंधे सानि मध्य चंदन मिल करत
केलि मनभाये ॥ निरख देव दुंदुभी बजावत पुष्पन वृष्टि कराये ॥२३॥
फूल गेंद सबहि न लियेँ कर गावत साँझी गीत ॥ गजगति चाल चलत

ब्रजसुंदरि बड़ी परम रस प्रीत ॥२४॥ चहुँ दिशि तैं सब आय जुरी वृष-
 भान नृपतिके द्वारा ॥ कीरतिजू तब करत आरती राई लौन उतार ॥२५॥
 कीरति बिहँसि कही मृदुबानी लली चली यह कौन ॥ प्यारी कह्यौ
 नंदगाम बसति हैं खेलन आई भौन ॥२६॥ केसर चंदन अगर अरगजा
 मृगमद कुंकुमगारा ॥ कामधेनुकौ गोबर लैंकें साँझी धरत सँवार ॥२७॥
 धूप दीप कर भोग धर्यौ आरती करी है बनाया ॥ माँगत सीख सबै ब्रज-
 बाला हाथ जोर शिर नाथ ॥ २८ ॥ ब्यारू आज करौ मिल ह्यौहीं
 राधाजू के साथ ॥ कीरतिजू यों कहत सबनसों परसूँ अपने हाथ ॥२९॥
 कर ब्यारू गृह गई सहेलीं रह्यौ खेलन कौरगा ॥ कमल सेज पर पौढ़े दोऊ
 मिल साँवरी राधा संग ॥ ३० ॥ कहा कहूँ कछु कहत न आवैं प्रभुकौ
 यही स्वरूप ॥ त्रियावसन ललिताहीं दीये कीये हैं निजरूप ॥३१॥
 बरनौ कहा यथामति मेरी रसना एक बनाया ॥ हरीदास प्रभुकी यह शोभा
 निरखत मन न अघाय ॥३२॥

(८)  ॥ श्याम सनेही गाइये यातें
 श्रीवृंदावन रज पाइये हो ॥३३॥ राधा जिनकी भामती कुंजन कुंजन-
 केली ॥ तरु तमाल ढिंग अरुझी मानों लसत कनककी बेली ॥१॥ महा-
 मोहनी मन हर्यौ रसबस कीने लाल ॥ कुचकलशान पर मन मल्यौ लट
 बाँध्यौ मैन मराल ॥२॥ नयन सैन दै तन बेध्यौ मन बेध्यौ कल गाना ॥
 अंजन फंदन कुँवर कुरंगन चलैं दोऊ भौह कमाना ॥३॥ नकबेसर बड़सी
 लगी चित्त चंचल मनमीन ॥ अधरसुधा दै बेधियौ चकृत किये आधीन
 ॥४॥ अंग अंगरसरंगमें मगन भये हरि नाह ॥ ब्यास स्वामिनी सुख दियौ
 पिय संगमें सिंधु प्रवाह ॥५॥  ॥ सखियन संग राधिका बीनत
 सुमनन बन माँह ॥ साँझी पूजनकौ आतुरही ठाढ़े कदंब की छाँह ॥१॥
 सखी भेष दै मोहनकौ लै चली आपने गेह ॥ पूछी कीरति यह को सुंदरि
 तब कह्यौ मेरी सनेह ॥२॥ साँझी खेल बिदाकर सबकौ दोऊ पौढ़े सेज
 मझार ॥ सगरी राति सूर के स्वामी बसि सुख कियौ अपार ॥३॥ 
 (९)  ॥ राधा प्यारी कह्यौ सखिनसों साँझी धरौरी माई ॥ बिटियाँ बहुत

अहीरन की मिल गई जहाँ फूल अथाई ॥१॥ यह बात जानी मनमोहन
 कह्यो सबन समुभाय ॥ भैया बछरा देखें रहियो मैया छाक धराय ॥२॥
 ऐसे कहि चले श्याम सुंदरवर पोहोंचे जहाँ सब आय ॥ सखीरूप है
 मिले लाड़िले फूल लिये हरखाय ॥३॥ करसों करराधा संग शोभित
 साँझी चीती जाय ॥ खटरसके बिंजन अरपेतब मन अभिलाप पुजाय
 ॥४॥ कीरतिरानी लेत बलैयाँ विधिसों विनय सुनाय ॥ सूरदास अवि-
 चल यह जोरी मुख निरखत न अघाय ॥५॥  सखियन
 संग राधिका कुँवरि बीनति कुसुम दलियाँ ॥ एकही बानिक एक वेश
 क्रम स्यामबालके हाथन रंगीली डलियाँ ॥ १ ॥ एक अनूपम माल
 बनावत एक परस्पर बेनी गूँथत शोभित कुंद कलियाँ ॥ सूरदास
 मदनमोहन आय अचानक ठाढ़े भये मानी है रंगरलियाँ ॥२॥ 
 ॥ चल वृषभान सुता साँझीकों आईहों देख फूल रहे फूल ॥
 और सखी सब गई लड़ैती मोहि मिलीं कालिंदी कूल ॥ १ ॥ हों पठई
 उन बोलन तुमकों आतुरगति आईहों दौरा ॥ बेगि चलौ छिन बिलंब करौ
 जिन वे सब चुनचुन लैंगी तोर ॥२॥ बरन बरन बिबिध भाँतके फुले
 कुसुम शोभा देता ॥ तजि स्वारथ हों अपनौ आई भलौ मनावन तुझरे हेत
 ॥३॥ कहा तेरो नाम कौन की बेटी अबलौं हम देखी नहिं बाल ॥
 कीनी भली भलें तुम आई काज परायौ करत कृपाल ॥४॥ रूपरास
 दुति कांति कृपानिधि देखियत हैं तुम परम उदारा ॥ या छबिकी पटतर
 कोऊ नाहीं कोटिक चंदा डारौं वारा ॥५॥ बास नंदगाम है मेरो स्यामा
 स्यामा सब कोऊ कहता ॥ तुव प्रताप वृषभान बाँह बल बहुत बरस भये
 ब्रजमें रहत ॥ ६ ॥ मैयासों मिस कौन बने हो तुम प्रवीन कछु करौ
 उपाया ॥ लै चल मोहि मिलवौ रानीसों करूँ उन मन भायौ दाव ॥७॥

तब बोली राधा कीरतिसों तोहि मैया कोऊ बोलत द्वार ॥ बोल लेहु
 गृह काज करत हों ताहि बोलिये भवन मँभार ॥८॥ तब स्यामा कीर-
 ति पै आई देखतही मन रह्यो लुभाया ॥ दै असीस नीके आदर कर ढिंग
 बैठारी मोद बढ़ाया ॥९॥ बूझ्यो नाम काज कहा आई कीरति बोली हित

उपजाय॥स्यामा नाम कहतहैं मेरौ तबहीं बोली मृदु सुसिकाय ॥१०॥
 आई डार कुँवरि कर कंकण पायौ है रखवारे हाथ ॥ बीनत फूल काल्ह
 हम सबही राधा सहित हतीं सब साथ ॥ ११ ॥ इन न रही सुध गिरत
 न जान्यौं हौं रही इकटक नयनन तान ॥ अनबोली हौं है रही रानी
 यों मनमें नहीं जान पहिचान ॥१२॥ अब हौं आज गई फूलनकों तब
 माली बोल्यौ यों माय ॥ आउरी कुँवरि सुता तू कहाँकी कहा दूँदत
 हौं देहु बताय ॥१३॥ मैं कह्यौ वीर गयौ एक कंकण राधा गई है
 काल्हकी डार ॥ तब उन कह्यौ बोलि उन लावौ ताकों ताहि नीके देहु
 सँभारा ॥१४॥ ततछिन अति आतुर उठ धाई काज करन हित तुम्हरे पास
 ॥ राजकाज ज्यों कछु बनि आवै बोल भलाई और न आसा ॥१५॥ तब
 कर जोरि कह्यौ तुम हौ धन्य कीरति बोल कुँवरि दई संग ॥ अति आनंद
 बढ़्यौ दुहुन मन फूले समात नहीं अंग अंग ॥१६॥ ललिता संग कुँव-
 रिके दीनी आवौगी उलट सब बेग ॥ स्यामा सब बिध तुम प्रवीन हौ
 तुम विश्वास सब तज्यौ उद्वेग ॥१७॥ लै संग जाउ आउ पौहचावन
 तब घर जाउ आपने काज ॥ तुम निश्चित निधर करहौ मनमें आऊँ लै अब
 सुखके साज ॥१८॥ पहुँचे जहाँ सघन गेहवर बन ललित लता द्रुम
 गहबर माँहि ॥ जान एकांत चाह चित क्रीड़ा तब प्यारी धर गरेमें बाँहि
 ॥१९॥ देख्यौ स्थल प्यारी सुंदरवर चाहें हियेमें करन विनोद ॥
 परसत अंग मदन व्यापत तब चितवत प्यारी स्यामाकोद ॥ २० ॥

ललिता ललित बचन हैंस बोली ए छलिया पहिचानत नाहिं ॥ मैं तौ जान
 रही कबहीकी समझ रही मनही मन माँहि ॥ २१ ॥ क्यौं न कही पहिलें
 सखी हमसौं तुमही हमसौं करत दुराव ॥ ऊपरतें अनखत ललितासौं
 मनमें आनंद उपजत चाव ॥ २२ ॥ रसमें बिरस क्यौं करत लड़ैती यों
 बोली ललिता करजोर ॥ तब सुध बुध कैसेंके रहिये जब विधिना लैहें
 चितचोर ॥ २३ ॥ तिय पट पलट देहु हरि मोकों पिय प्यारी कीजै कल
 केलि ॥ कुसुम शैथा ललिता रचि कुंजन आप भई इत उत दोउ मेलि
 ॥ २४ ॥ कर ओली चोलीकी बीनन गई कुसुम ललिता बन माँभा रति

रस विलस निकस कुंजनतैं पिथ प्यारी आये लखि साँझ ॥२५॥ उत
 सब सखिन लखी ललिता जब हँसत हँसत आई ता पास ॥ बूझत आज
 अकेली क्यों तू राधा छाँड़िकें करत बिलास ॥२६॥ यह पट पीत कौनको
 लहेगा प्रकट जनावत बदन बिकास ॥ हम कहाँ कहत दुरावतहौ क्यों
 मेंटौ भलें तुम मन्मथ प्यास ॥२७॥ तब ललिता टेरी मनमोहन आश
 धिरीं सब ब्रजकी बाला ॥ आलिंगन चुंबन दै हरिकों चोरी राधाकी नंद-
 लाल ॥२८॥ मिल सब गई लाजकी मारी इत राधा मन रही लजाया ॥
 डलिया फूलनकी आगें धरि सब बिधिमिललीनी बतराया ॥२९॥ अब
 घर चली बेर है जै है तौ खीज बाबा वृषभाना ॥ बहुरि सखीको भेख श्याम
 कर सखियन लै पहुँचे घर आना ॥३०॥ कीरति आई द्वार गान सुन अरघ
 दियो अरु आरति बारि ॥ भवन माँझ लै स्यामा बोली ढिंग बैठारी कर
 बलहारि ॥ ३१ ॥ साँझ भई अब जिन घर जैयो रहियो सोय आज
 यहाँ रात ॥ साँझी खेल कीजियै ब्यारु करजु कलेऊ जैयो प्रात ॥३२॥
 शंक न करौ निशंक खेलौ घर अपनौ तुम मनमें जाना ॥ कहत सबै बश-
 कीनी कीरति नई सखी भई रीमनमान ॥३३॥ लीप भीत चंदन गोबर
 रचि चित्रित साँझी धरी बनाय ॥ जो देखत सोई रहत चकृत है कहा
 और नहिं त्रिभुवन माँया ॥३४॥ धूप दीप नैवेद्य भोग घर करत आरत
 दोउ कर जोर ॥ चिरजीवौ राधा श्री श्यामा हरैं हरैं यों कहैं तृण तो
 ॥३५॥ कीरति कहत करौ अब ब्यारु भूखी हौ जो सबै सुकुमार ॥ सब
 प्रताप तिहारौ घर रानी अब जै है बहु भई अबारा ॥३६॥ भलौ भद्र सिदौसी
 अइयो भुवन तुमारे तैं उठि भोर ॥ दै असीस सब चलीं सखी घर बिहरत
 दंपति संग बरजोर ॥३७॥ लरियो जिन राधा श्री श्यामा तुम सोयरहौ
 मेरौ पलका डार ॥ ललिता पानीको ढिंग रहियो कीरत सोई अपने दर-
 बार ॥३८॥ सुरत केलि सब विधि सुख लूथ्यौ मिसहिं मिस दोऊ परम
 विचित्रा ॥ केतिक बुद्धि श्रुति पारन पावत बरन सकै को अगणित चरित्र
 ॥३९॥ भोर भयो जागे नरनारी सब जाग्यौ बरसानौ गाम ॥ करन
 कलेऊ कीरति देखत राधा श्यामा लै लै नाम ॥४०॥ आलस भरे

उनीदे दोऊ लेत जूँभाय अंग अकराय ॥ बदन पखार उठाय सेजतें अति
 हितसौं भोजन करवाय ॥ ४१ ॥ पैड़ पाँच पहुँचाय द्वारतें ललितासौं कही यों
 पहुँचाय ॥ चिबुक परस सिर पर कर फेर्यौ घर पठई श्यामा समभाय
 ॥ ४२ ॥ पूरन पुन्य फले ललिता के पहुँचावन मिस पायौ लाव ॥ मानों
 कसौटी कसत कनक कौ देखत को पायौ है दाव ॥ ४३ ॥ त्रियवागौ पायौ
 नौछावर आई उलटि घर रीभरि भाय ॥ इत जसुमति सुत कौ बूझत जब
 कहत बात मोहन समुझाय ॥ ४४ ॥ नयन सजल भर भर कर मीड़त बिगरी यों
 कहितो तेरे बोल ॥ मैया हम न बसैंगे ब्रज में ब्रज बासिनी मद मत्त अलोल
 ॥ ४५ ॥ गोपीजन कौ कृष्ण अति बल्लभ गहि बाँध्यौ कर माखन चोर ॥
 उपज्यौ हास सुनत सुत बतियाँ उर लायौ कर प्रान अकोर ॥ ४६ ॥ मेरे
 लाल कौ जो कोउ बाँधै बाँधूँ ताहे कोटिक बार ॥ चिरजीवौ रसिकन की
 जीवन पीवत नंद यशोमति जलवार ॥ ४७ ॥

॥ साँझी की अमावस 
 लाल ब्रजभूषन मन भामते नैंक बनतै बेगे आव हो ॥ जसोमती सुत
 करुना भरे नैंक हृदय सुख उपजाव हो ॥ १ ॥ डोलन बर्हापीड़की
 श्रुति युग कुंडल भलकाव हो ॥ नाचत तानन तोरकै नैंक बदन अलक
 अरु भाव हो ॥ २ ॥ देखत इत उत भावसौं नैंक चपल नयन चमकाव हो ॥
 उठत रेख मुखचंद्र की शीतलता हृदय सिराव हो ॥ ३ ॥ चलन युगल
 मृदुगंडकी नैंक चुंबन चाय बढाव हो ॥ अधर सुधारस सौं सबै मुरलीके
 रंघ पुराव हो ॥ ४ ॥ गावत गुन गोपीनके नैंक श्रवनन शब्द सुनाव हो ॥
 सुंदर ग्रीवा की डोलनी पलकन की परन भुलाव हो ॥ ५ ॥ कंठसरी दर-
 सायकै नैंक तनकी दशा बिसराव हो ॥ गजमुक्ता बिचलालही सौं उर-
 पर हार धराव हो ॥ ६ ॥ पहाँची दोऊ कर शोभती नैंक फुँदना श्याम
 लटकाव हो ॥ बाजूबंद भुजमें बने मेरे मनके माँझ गढ़ाव हो ॥ ७ ॥ कटि
 पीताम्बर काछनी नैंक नीके अंग नचाव हो ॥ क्षुद्र घंटिका बाजनी ता
 ऊपर सरस धराव हो ॥ ८ ॥ चाल न्यारी भाँतिकी नैंक नूपुर शब्द मिलाव
 हो ॥ नखभूषण की जोतसौं सकलन की जोत लजाव हो ॥ ९ ॥ आँगें
 गोधन हाँकै नैंक पाछें खेल कराव हो ॥ बेंत हाथ फूलन गूँथकै नैंक काँधे

धरे दिखाव हो ॥१०॥ गोपबालक मंडली मध्य नायक नैंक कहाव हो ॥
 नाचन मिस ब्रजभूमिमें नेक चरनचिह्न उपटाव हो ॥११॥ आवत बाँये
 हाथ लै नैंक लीला कमल फिराव हो ॥ बनमाला अलियूथकों कमल
 फिराव उड़ाव हो ॥१२॥ ब्रज युवतिनके बृंदमें धँसि अपनौ अंग परसाव
 हो ॥ आलिंगन बहु भांति दै युवतिनके पूरौ भावहो ॥१३॥ द्यौस विरह
 व्याकुल सखी लै अपने अंग लगाव हो ॥ तुम बिन सूनौ साँज समय
 यह ब्रज फेर बसाव हो ॥१४॥ घोष द्वार चल आयकें बल संग आरती
 उतराव हो ॥ दै सुख सगरे घोषकों नैंक दिनकों विरह बहावहो ॥१५॥
 यहि बिध ब्रज युवति कहें सुन नंद महर घर आवहो ॥ रसिकन यह
 वर दीजियै श्रीबल्लभपद पाव हो ॥ १६ ॥  ॥ छुवरियाँ
 बासकी फूलें फूल भरी ॥ कबहुंक कटि पर कबहुंक कर पर, कबहुंक
 सीस धरी ॥ १ ॥ ढाँक ढाँक लई नीके पीयरे पट शोभत जात न
 डरी ॥ धौंधीके प्रभु बोलन आवत, काहु बात अचगरी ॥२॥  ॥१३
 (५८)  ॥ राग पूर्वी ॥  आई हूँ अकेली साँभ साँभीके कुसुम लैन
 भलों मिल गयौ तू जात घर गायलै ॥ आयौ घनघोर मेह सूझत नहीं
 कछु गेह चुंदरी चटक रंग नीरतें बचाय लै ॥ १ ॥ चपला चमक चक-
 चौंधी ते डरत हों एरे निरमोही अंग संग क्योंन लगाय लै ॥ कहा-
 वत हौ सुजान कीजियै पै न मानू यही है सथान कारी कामरी उदाय
 लै ॥ २ ॥  ॥१४॥ राग मालव ॥  खेलत साँजी रंग रह्यौ ॥
 नंदनंदन वृषभाननंदिनी अंतरपटजू दयौ ॥ १ ॥ फूलन डलिया भर
 भर लीनी चित्रविचित्र भयौ ॥ बहु प्रकार व्यंजन धर आगें बिनय
 करत नयौ ॥ २ ॥ आरती करत कोट की सुंदरी रागही रंग छयौ ॥
 श्रीबिठलगिरिधरन कृपानिधि ब्रजजन सुखही दयौ ॥३॥  ॥१५॥
 (५९) राग खमाच ॥  साँजी भली बन आईरे ॥ श्रीराधे वृषभानलली ॥
 बरन बरन फूल बीनकें ॥ अपने हाथ बनाईरे ॥ १ ॥ नंदगामतें सखी
 भेखलै आये कुंवर कन्हआईरे ॥ पुरुषोत्तम प्रभु की छबी निरखत ॥ नैन
 निरखि सचुपाइरे ॥२॥

(१८)

देखत दृगन अघानी ॥ कुसुम कलीहों बीनन आई सघन लता अरु
झानी ॥ १ ॥ सोंधे सारी कमल बदन पर मधुप करत नकबानी ॥ प्रभु
कल्याण गिरिधर छबि निरखत बालत्रिया छतिया सियरानी ॥ २ ॥

(१९)

॥  ॥ पूजन चलीरी साँझी शुभघरी शुभदिन शुभ महुरत
रात ॥ चंचल चपल चपलासी डोलत चंपे जैसौ गात ॥ १ ॥ अपने
अपने मंदिर तें निकसी दीप लिए सब हाथ ॥ धौंधीके प्रभु तुम बहो

(२०)

नायक सब सखियनके साथ ॥ २ ॥  ॥ केसर फूल बीनत
राधागोरी ॥ भारी संग सहचरी बारी ॥ जिनके अंग सुगंध केसर की
अरु केसर रंग सारी ॥ १ ॥ जिनके तन वरन केसर कौ केसर परवुरी अंगुरिन
पर बारी ॥ नख प्रतिबिंब देख केसरको भूल गई सुध सारी ॥ २ ॥ बनही
बन आये गिरिधर जहाँ बिहार करत सुकुमारी ॥ जीवन गिरिधर सखी

(२१)

रूप धरि केल करत मनुहारी ॥ ४ ॥  ॥ पुजवत साँझी
कीरत माय ॥ कुंवर प्यारी राधा कों लाड़ लड़ाय ॥ अरच चरच चंदन
बंदन लै फूलमाल पेहेराय ॥ बिबिध मधु मेवा भोग धराय ॥ १ ॥ बोली
वहै डोली घर घर तें ओलीन भर भर देत सुहाय ॥ कंचन थार उतार
आरती होंसन लागत पाय ॥ ललीके भाग सुहाग मनाय ॥ २ ॥ 

(२२)

५  राग जंगलो ॥  अरी तुम कौन हौरी फुलवा बीनन
हारी ॥ नेहलगन कौ बन्धौ बगीचा फूल रही फुलवारी ॥ १ ॥
मदनमोहन पीय यों बूझत हैं तू कोहै सुकुमारी ॥ ललिता बोली
लालसों यह वृषभान दुलारी ॥ २ ॥ या बनमें हम सदा बसत हैं
हमही करत रखवारी ॥ बिन बूझें तुम फुलवा बीनत जोबन मद
मतवारी ॥ ३ ॥ ललित बचन सुन लाल के सब रीझ रहीं ब्रजनारी ॥

(२३)

सूरदास प्रभु रस बस कीनी बिरह बेदना टारी ॥ ४ ॥  ॥
फुलवा बीनन हों गईरी जमनाकूल कुसुमन की भीर ॥ उरभ
रह्यौ अरनी की डरीयाँ तिहि छिन मेरौ अंचल चीर ॥ १ ॥ तब कोऊ तहाँ
अचानक आयौ मालती लता सघन निरबार ॥ वाहीनें मेरौ पट सुर-
झायौ एकटक मोतिन रह्यौ निहार ॥ २ ॥ मन अरुमाय बसन सुरमायौ
और कहा कहूँ लाज की बात ॥ हौँ अपने मग चली जात सखी वे सैनन सों
हाहाखात ॥ ३ ॥ नाम न जानौ वह श्याम बरन है पीरौ पट बाकौ हतौ
दुकल ॥ अब बाई बन लै चल नागर फिर साँझी बीनन कँ फल ॥ ४ ॥